माननीय राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का अपराध ब्यूरो द्वारा आयोजित
संगोष्ठी में उद्बोधन

स्थान :- लखनऊ, दिनांक :- 29 जून, 2013 समय :- प्रात: 11 बजे

अपराध ब्यूरो राष्ट्रीय पत्रिका द्वारा ""अपराध नियंत्रण"" विषय पर आयोजित संगोष्ठी में भाग लेते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। अपराध नियंत्रण विषय पर आयोजित संगोष्ठी का प्रयास सराहनीय है। मैं पत्रिका के पदाधिकारियों को बधाई और शुभकामनायें देता हूं।

अपराध या दंडाभियोग की परिभाषा भिन्न-भिन्न रूपों में की गई है। दंडाभियोग समाज विरोधी क्रिया है। समाज द्वारा निर्धारित आचरण का उल्लंघन या उसकी अवहेलना अपराध है। यह ऐसी क्रिया या क्रिया में त्रुटि है, जिसके लिए दोषी व्यक्ति को कानून द्वारा निर्धारित दंड दिया जाता है।

आज हमारे देश और प्रदेशों में अपराध बढ़ रहे हैं विशेषकर महिलाओं और बालिकाओं के साथ, यह चिंता का विषय है। पहले चोरी, डकैती और हत्या जैसे अपराध की खबरें कभी-कभी समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की सुर्खियां हुआ करती थीं। लेकिन अब यह आम बात हो गई है। महिलाओं और बालिकाओं के साथ प्रत्येक दिन बलात्कार और अत्याचार की खबरों ने तो समाज के हर वर्ग को झकझोर दिया है। सिर्फ कानून बनाने या पुलिस के कार्यवाही कर देने मात्र से अपराध रोके नहीं जा सकते हैं। इसके लिए समाज के सभी लोगों को मिल बैठकर इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

समाज में नैतिक मूल्यों में आ रही गिरावट और बच्चों में सदाचार की कमी अपराध के बढ़ने का सबसे बड़ा कारण है। हमारे युवा आज अपनी संस्कृति, सभ्यता और परम्पराओं से दूर होते जा रहे हैं। पश्चिमी सभ्यता और आधुनिक विकास का प्रभाव युवा वर्ग पर बहुत बढ़ गया है। आज हमारे युवा अपने बड़े-बुजुर्गों की बात को सुनना तो दूर उस पर ध्यान भी नहीं देते हैं। इसके लिए सबसे पहले माता-पिता दोषी हैं। उन्हें अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देने होंगे।

अपराध बढ़ने का एक कारण अपराधी को संरक्षण देना भी है। जब कोई व्यक्ति अपराध करता है, तो उसका अपराध छुपाने की कोशिश की जाती है। समाज के सभी वर्गों के लोगों को तय कर लेना होगा कि वे अपराधी को संरक्षण नहीं देंगे। प्रत्येक व्यक्ति उसकी गतिविधियों पर नजर रखें और पुलिस को सूचना देकर अपनी सजगता के दायित्व का निर्वाहन करें। मुझे पुर्ण विश्वास है कि अपराध पर जल्द नियंत्रण पाया जा सकता है। अपराधी किसी के लिए भी खतरनाक हो सकता है। यहां तक कि जब कोई व्यक्ति एक अपराध करके बच जाता है तो उसका उत्साह बढ़ जाता है, और वह फिर अपने ही घर के लोगों के साथ अपराध करने लगता है। यही कारण है कि वृद्धावस्था में लोग पैसा और जमीन जायदाद के कारण अपने ही सगे संबंधियों का शिकार हो जाते हैं। पैसे के लालच में उनका अपना बेटा उन पर हमला कर देता है।

मुझे प्रसन्नता है कि अपराध ब्यूरो पत्रिका ने समाज के ज्वलंत विषय पर संगोष्ठी का आयोजन कर पत्रकारिता की परम्परा और संस्कृति का निर्वाह किया है। स्वतंत्रता के आन्दोलन में और आजादी के बाद देश के विकास में पत्रकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पत्रकारों ने समाज और देश को समय-समय पर जागरूक करने के साथ-साथ मार्गदर्शन भी किया है। मुझे आशा है कि आज की इस संगोष्ठी में भाग लेने वाले विशेषज्ञों के आपसी विचार विमर्श से प्रदेश में ही नहीं पूरे देश में अपराध के विरूद्ध लोगों में जागृति उत्पन्न होगी और शांति का वातावरण निर्मित हो सकेगा।

पत्रकारों से में यह जरूर कहना चाहूंगा कि वह निष्ठापूर्वक अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाहन करें। लोगों में अपना विश्वास कायम करें।

मैं अपराध ब्यूरो के पादाधिकारियों को एक बार पुन: बधाई देता हूं ।

जय हिन्द।